1 प्रतापनारायण मिश्र

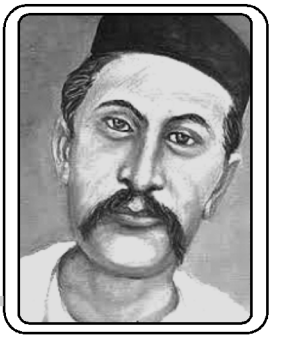

जीवन-परिचय—पं0 प्रतापनारायण मिश्र का जन्म सन् 1856 ई0 में उन्नाव जिले के बैजे नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता संकटाप्रसाद एक विख्यात ज्योतिषी थे और इसी विद्या के माध्यम से वे कानपुर में आकर बसे थे। पिता ने प्रतापनारायण को भी ज्योतिष की शिक्षा देना चाहा, पर इनका मन उसमें नहीं रम सका। अंग्रेजी शिक्षा के लिए इन्होंने स्कूल में प्रवेश लिया, किन्तु उनका मन अध्ययन में भी नहीं लगा। यद्यपि इन्होंने मन लगाकर किसी भी भाषा का अध्ययन नहीं किया, तथापि इन्हें हिन्दी, उर्दू, फारसी, संस्कृत और बँगला का अच्छा ज्ञान हो गया था। एक बार ईश्वरचन्द्र विद्यासागर इनसे मिलने आये तो इन्होंने उनके साथ पूरी बातचीत बँगला भाषा में ही किया। वस्तुतः मिश्र जी ने स्वाध्याय एवं सुसंगति से जो ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त किया, उसे गद्य, पद्य एवं निबन्ध आदि के माध्यम से समाज को अर्पित कर दिया। मात्र 38 वर्ष की अल्पायु में ही सन् 1894 ई0 में कानपुर में इनका निधन हो गया।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म-स्थान**—बैजे गाँव (उन्नाव), उ0प्र0।
- **जन्म एवं मृत्यु सन्**—1856 ई0, 1894 ई0।
- **पिता**—संकटाप्रसाद (ज्योतिषी)।
- **प्रमुख कृतियाँ**—कलि-कौतुक, हठी हम्मीर, प्रताप पीयूष, मन की लहर, भारत-दुर्दशा, प्रताप समीक्षा, गौ-संकट।
- **सम्पादन**—'ब्राह्मण' एवं 'हिन्दुस्तान'।
- **भाषा**—व्यावहारिक एवं खड़ीबोली।
- **हिन्दी साहित्य में स्थान**—हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान रहा।

साहित्यिक परिचय—मिश्र जी ने अपना साहित्यिक जीवन ख़्याल एवं लावनियों से प्रारम्भ किया था, क्योंकि आरम्भ में इनकी रुचि लोक-साहित्य का सृजन करने में थी। यहीं से ये साहित्यिक पथ के सतत प्रहरी बन गये। कुछ वर्षों के उपरान्त ही ये गद्य-लेखन के क्षेत्र में उतर आये। मिश्र जी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित होने के कारण उनको अपना गुरु मानते थे। उनकी-जैसी ही व्यावहारिक भाषा-शैली अपनाकर मिश्र जी ने कई मौलिक और अनूदित रचनाएँ लिखीं तथा 'ब्राह्मण' एवं 'हिन्दुस्तान' नामक पत्रों का सफलतापूर्वक सम्पादन किया। भारतेन्दु जी की 'कवि-वचन-सुधा' से प्रेरित होकर मिश्र जी ने कविताएँ भी लिखीं। इन्होंने कानपुर में एक 'नाटक सभा' की स्थापना भी की, जिसके माध्यम से पारसी थियेटर के समानान्तर हिन्दी का अपना रंगमंच खड़ा करना चाहते थे। ये स्वयं भारतेन्दु जी की तरह एक कुशल अभिनेता थे। बँगला के अनेक ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद करके भी इन्होंने हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की। इनकी साहित्यिक विशेषता ही थी कि 'दाँत', 'भौं', 'वृद्ध', 'धोखा', 'बात', 'मुच्छ'-जैसे साधारण विषयों पर भी चमत्कारपूर्ण और असाधारण निबन्ध लिखे।

कृतियाँ–मिश्र जी ने अपनी अल्पायु में ही लगभग 40 पुस्तकों की रचना की। इनमें अनेक कविताएँ, नाटक, निबन्ध, आलोचनाएँ आदि सम्मिलित हैं। इनकी ये कृतियाँ मौलिक एवं अनूदित दो प्रकार की हैं।

मौलिक : निबन्ध-संग्रह–'प्रताप पीयूष', 'निबन्ध नवनीत', 'प्रताप समीक्षा'।

नाटक–'कलि प्रभाव', 'हठी हम्मीर', 'गौ-संकट'।

रूपक–'कलि-कौतुक', 'भारत-दुर्दशा'।

प्रहसन–'ज्वारी-खुआरी', 'समझदार की मौत'।

काव्य–'मन की लहर', 'शृंगार-विलास', 'लोकोक्ति-शतक', 'प्रेम-पुष्पावली', 'दंगल खण्ड', 'तृप्यन्ताम्', 'ब्राडला-स्वागत', 'मानस विनोद', 'शैव-सर्वस्व', 'प्रताप-लहरी'।

सम्पादन–'ब्राह्मण' एवं 'हिन्दुस्तान'।

अनूदित : 'पंचामृत', 'चरिताष्टक', 'वचनावली', 'राजसिंह', 'राधारानी', 'कथामाला', 'संगीत शाकुन्तल' आदि। इनके अतिरिक्त मिश्र जी ने लगभग 10 उपन्यासों, कहानी, जीवन-चरितों और नीति पुस्तकों का भी अनुवाद किया; जिनमें–राधारानी, अमरसिंह, इन्दिरा, देवी चौधरानी, राजसिंह, कथा बाल-संगीत आदि प्रमुख हैं।

भाषा-शैली–सर्वसाधारण के लिए अपनी रचनाओं को ग्राह्य बनाने के उद्देश्य से मिश्र जी ने सर्वसाधारण की बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। इसमें उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है; जैसे-कलामुल्लाह, वर्ड ऑफ गॉड आदि। यत्र-तत्र कहावतों, मुहावरों एवं ग्रामीण शब्दों के प्रयोग से उनके वाक्य में रत्न की भाँति ये शब्द जड़ जाते हैं, अतः भाषा प्रवाहयुक्त, सरल एवं मुहावरेदार है।

मिश्र जी की शैली के दो रूप मिलते हैं–(1) हास्य-व्यंग्यपूर्ण विनोदात्मक शैली, (2) गम्भीर विचारात्मक एवं विवेचनात्मक शैली। **'बात'** मिश्र जी की हास्य–व्यंग्यप्रधान शैली में लिखा गया निबन्ध है।

●●●

बात

यदि हम वैद्य होते तो कफ और पित्त के सहवर्ती बात की व्याख्या करते तथा भूगोलवेत्ता होते तो किसी देश के जल-बात का वर्णन करते, किन्तु दोनों विषयों में से हमें एक बात कहने का भी प्रयोजन नहीं है। हम तो केवल उसी बात के ऊपर दो-चार बातें लिखते हैं, जो हमारे-तुम्हारे सम्भाषण के समय मुख से निकल-निकल के परस्पर हृदयस्थ भाव को प्रकाशित करती रहती हैं।

सच पूछिये तो इस बात की भी क्या ही बात है जिसके प्रभाव से मानव जाति समस्त जीवधारियों की शिरोमणि (अशरफ-उल मखलूकात) कहलाती है। शुकसारिकादि पक्षी केवल थोड़ी-सी समझने योग्य बातें उच्चारित कर सकते हैं, इसी से अन्य नभचारियों की अपेक्षा आदृत समझे जाते हैं। फिर कौन न मानेगा कि बात की बड़ी बात है। हाँ, बात की बात इतनी बड़ी है कि परमात्मा को लोग निराकार कहते हैं, तो भी इसका सम्बन्ध उसके साथ लगाये रहते हैं। वेद, ईश्वर का वचन है, कुरआनशरीफ कलामुल्लाह है, होली बाइबिल वर्ड ऑफ गाड है। यह वचन, कलाम और वर्ड बात ही के पर्याय हैं जो प्रत्यक्ष मुख के बिना स्थिति नहीं कर सकती। पर बात की महिमा के अनुरोध से सभी धर्मावलम्बियों ने 'बिन बानी वक्ता बड़ जोगी' वाली बात मान रखी है। यदि कोई न माने तो लाखों बातें बना के मनाने पर कटिबद्ध रहते हैं। यहाँ तक कि प्रेम सिद्धान्ती लोग निरवयव नाम से मुँह बिचकावेंगे। 'अपाणिपादो जवनो ग्रहीता' पर हठ करनेवाले को यह कह के बातों में उड़ावेंगे कि ''हम लूले-लँगड़े ईश्वर को नहीं मान सकते, हमारा प्यारा तो कोटि काम सुन्दर श्याम वर्ण विशिष्ट है।'' निराकार शब्द का अर्थ श्री शालिग्राम शिला है जो उसकी श्यामता का द्योतन करती है अथवा योगाभ्यास का आरम्भ करनेवाले को आँखें मूँदने पर जो कुछ पहले दिखायी देता है वह निराकार अर्थात् बिलकुल काला रंग है। सिद्धान्त यह कि रंग-रूप रहित को सब रंग-रंजित एवं अनेक रूप सहित ठहरावेंगे, किन्तु कानों अथवा प्राणों व दोनों को प्रेम-रस से सिंचित करनेवाली उसकी मधुर मनोहर बातों के मजे से अपने को वंचित न रहने देंगे।

जब परमेश्वर तक बात का प्रभाव पहुँचा हुआ है तो हमारी कौन बात रही? हम लोगों के तो 'गात माँहि बात करामात है।' नाना शास्त्र, पुराण, इतिहास, काव्य, कोश इत्यादि सब बात ही के फैलाव हैं जिनके मध्य एक-एक बात ऐसी पायी जाती है जो मन, बुद्धि, चित्त को अपूर्व दशा में ले जानेवाली अथच लोक-परलोक में सब बात बनानेवाली है। यद्यपि बात का कोई रूप नहीं बतला सकता कि कैसी है पर बुद्धि दौड़ाइये तो ईश्वर की भाँति इसके भी अगणित ही रूप पाइयेगा। बड़ी बात, छोटी बात, सीधी बात, खोटी बात, टेढ़ी बात, मीठी बात, कड़वी बात, भली बात, बुरी बात, सुहाती बात, लगती बात इत्यादि सब बात ही तो हैं।

बात के काम भी इसी भाँति अनेक देखने में आते हैं। प्रीति-वैर, सुख-दुःख, श्रद्धा-घृणा, उत्साह-अनुत्साह आदि जितनी उत्तमता और सहजता बात के द्वारा विदित हो सकते हैं, दूसरी रीति से वैसी सुविधा ही नहीं। घर बैठे लाखों कोस का समाचार मुख और लेखनी से निर्गत बात ही बतला सकती है। डाकखाने अथवा तारघर के सहारे से बात की बात में चाहे जहाँ की जो बात हो, जान सकते हैं। इसके अतिरिक्त बात बनती है, बात बिगड़ती है, बात आ पड़ती है, बात जाती रहती है, बात उखड़ती है। हमारे तुम्हारे भी सभी काम बात पर ही निर्भर करते हैं। 'बातहि हाथी पाइये बातहि हाथी पाँव' बात ही से पराये अपने और अपने पराये हो जाते हैं। मक्खीचूस उदार तथा उदार स्वल्पव्ययी, कापुरुष युद्धोत्साही एवं युद्धप्रिय शान्तिशील, कुमार्गी सुपथगामी अथच सुपन्थी कुराही इत्यादि बन जाते हैं।

बात का तत्त्व समझना हर एक का काम नहीं है और दूसरों की समझ पर आधिपत्य जमाने योग्य बात गढ़ सकना भी ऐसों-वैसों का साध्य नहीं है। बड़े-बड़े विज्ञवरों तथा महा-महा कवीश्वरों के जीवन बात ही के समझने-समझाने में व्यतीत हो जाते हैं। सहृदयगण की बात के आनन्द के आगे सारा संसार तुच्छ जँचता है। बालकों की तोतली बातें, सुन्दरियों की मीठी-

मीठी प्यारी-प्यारी बातें, सत्कवियों की रसीली बातें, सुवक्ताओं की प्रभावशालिनी बातें जिनके जी को और का और न कर दें, उसे पशु नहीं पाषाणखण्ड कहना चाहिए; क्योंकि कुत्ते, बिल्ली आदि को विशेष समझ नहीं होती तो भी पुचकार के 'तू-तू', 'पूसी-पूसी' इत्यादि बातें कह दो तो भावार्थ समझ के यथासामर्थ्य स्नेह प्रदर्शन करने लगते हैं। फिर वह मनुष्य कैसा जिसके चित्त पर दूसरे हृदयवान् की बात का असर न हो।

हमारे परम पूजनीय आर्यगण अपनी बात का इतना पक्ष करते थे कि "तन तिय तनय धाम धन धरनी। सत्यसंध कहँ तृन सम बरनी।" अथच "प्रानन ते सुत अधिक है सुत ते अधिक परान। ते दूनो दशरथ तजे, वचन न दीन्हों जान।" इत्यादि उनकी अक्षर-सम्बद्धा कीर्ति सदा संसार-पट्टिका पर सोने के अक्षरों से लिखी रहेगी। पर आजकल के बहुतेरे भारत कुपुत्रों ने यह ढंग पकड़ रखा है 'मर्द की जबान' (बात का उदय स्थान) और गाड़ी का पहिया चलता-फिरता ही रहता है। आज जो बात है कल ही स्वार्थान्धता के वश हुजूरों की मरजी के मुवाफिक दूसरी बातें हो जाने में तनिक भी विलम्ब की सम्भावना नहीं है। यद्यपि कभी-कभी अवसर पड़ने पर बात के अंश का कुछ रंग-ढंग परिवर्तित कर लेना नीति-विरुद्ध नहीं है। पर कब? जात्युपकार, देशोद्धार, प्रेम-प्रचार आदि के समय न कि पापी पेट के लिए।

एक हम लोग हैं जिन्हें आर्यकुल रत्नों के अनुगमन की सामर्थ्य नहीं है? किन्तु हिन्दुस्तानियों के नाम पर कलंक लगानेवालों के भी सहमार्गी बनने में घिन लगती है। इससे यह रीति अंगीकार कर रखी है कि चाहे कोई बड़ा बतकहा अर्थात् बातूनी कहे, चाहे यह समझे कि बात कहने का भी शऊर नहीं है, किन्तु अपनी मति के अनुसार ऐसी बातें बनाते रहना चाहिए जिनमें कोई-न-कोई किसी-न-किसी के वास्तविक हित की बात निकलती रहे। पर खेद है कि हमारी बातें सुननेवाले उँगलियों ही पर गिनने भर को हैं। इससे 'बात-बात में बात' निकालने का उत्साह नहीं होता। अपने जी को 'क्या बने बात जहाँ बात बनाये न बने' इत्यादि विदग्धालापों की लेखनी से निकली हुई बातें सुना के कुछ फुसला लेते हैं और बिन बात की बात को बात का बतंगड़ समझ के बहुत बात बढ़ाने से हाथ समेट लेना ही समझते हैं कि अच्छी बात है।

● **प्रतापनारायण मिश्र**

अभ्यास प्रश्न

● विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांशों में रेखांकित अंशों की व्याख्या और तथ्यपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिये–

(क) यदि हम वैद्य होते तो कफ और पित्त के सहवर्ती बात की व्याख्या करते तथा भूगोलवेत्ता होते तो किसी देश के जल-बात का वर्णन करते, किन्तु दोनों विषयों में से हमें एक बात कहने का भी प्रयोजन नहीं है। हम तो केवल उसी बात के ऊपर दो चार बातें लिखते हैं, जो हमारे-तुम्हारे सम्भाषण के समय मुख से निकल-निकल के परस्पर हृदयस्थ भाव को प्रकाशित करती रहती हैं।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

(iii) हम अपने हृदयस्थ भावों की अभिव्यक्ति किसके माध्यम से करते हैं?

(iv) भूगोलवेत्ता किसका अध्ययन करता है?

(v) वैद्य किस बात का वर्णन करते हैं?

(ख) जब परमेश्वर तक बात का प्रभाव पहुँचा हुआ है तो हमारी कौन बात रही? हम लोगों के तो 'गात माँहि बात करामात है।' नाना शास्त्र, पुराण, इतिहास, काव्य, कोश इत्यादि सब बात ही के फैलाव हैं जिनके मध्य एक-

एक बात ऐसी पायी जाती है जो मन, बुद्धि, चित्त को अपूर्व दशा में ले जाने वाली अथच लोक-परलोक में सब बात बनानेवाली है। यद्यपि बात का कोई रूप नहीं बतला सकता कि कैसी है पर बुद्धि दौड़ाइये तो ईश्वर की भाँति इसके भी अगणित ही रूप पाइयेगा। बड़ी बात, छोटी बात, सीधी बात, खोटी बात, टेढ़ी बात, मीठी बात, कड़वी बात, भली बात, बुरी बात, सुहाती बात, लगती बात इत्यादि सब बात ही तो हैं।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश के शीर्षक एवं लेखक का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

(iii) ''गात माँहि बात करामात है।'' का क्या तात्पर्य है?

(iv) कौन-सी बात चित्त, मन और बुद्धि को अपूर्व दिशा की ओर अग्रसर करती है?

(v) 'बड़ी बात', 'छोटी बात' एवं 'सीधी बात' मुहावरे का क्या अभिप्राय है?

(ग) सच पूछिये तो इस बात की भी क्या ही बात है जिसके प्रभाव से मानव जाति समस्त जीवधारियों की शिरोमणि (अशरफ-उल मखलूकात) कहलाती है। शुकसारिकादि पक्षी केवल थोड़ी-सी समझने योग्य बातें उच्चारित कर सकते हैं, इसी से अन्य नभचारियों की अपेक्षा आदृत समझे जाते हैं। फिर कौन न मानेगा कि बात की बड़ी बात है। हाँ, बात की बात इतनी बड़ी है कि परमात्मा को लोग निराकार कहते हैं, तो भी इसका सम्बन्ध उसके साथ लगाये रहते हैं। वेद, ईश्वर का वचन है, कुरआनशरीफ कलामुल्लाह है, होली बाइबिल वर्ड ऑफ गाड है। यह वचन, कलाम और वर्ड बात ही के पर्याय हैं जो प्रत्यक्ष मुख के बिना स्थिति नहीं कर सकती। पर बात की महिमा के अनुरोध से सभी धर्मावलम्बियों ने 'बिन बानी वक्ता बड़ जोगी' वाली बात मान रखी है।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

(iii) निराकार परमात्मा का सम्बन्ध बात से कैसे है?

(iv) मानव जाति समस्त जीवधारियों में क्यों शिरोमणि है?

(v) 'बिन बानी वक्ता बड़ जोगी' का क्या अभिप्राय है?

(घ) बात के काम भी इसी भाँति अनेक देखने में आते हैं। प्रीति-वैर, सुख-दुःख, श्रद्धा-घृणा, उत्साह-अनुत्साह आदि जितनी उत्तमता और सहजता बात के द्वारा विदित हो सकते हैं, दूसरी रीति से वैसी सुविधा ही नहीं। घर बैठे लाखों कोस का समाचार मुख और लेखनी से निर्गत बात ही बतला सकती है। डाकखाने अथवा तारघर के सहारे से बात की बात में चाहे जहाँ की जो बात हो, जान सकते हैं। इसके अतिरिक्त बात बनती है, बात बिगड़ती है, बात आ पड़ती है, बात जाती रहती है, बात उखड़ती है। हमारे तुम्हारे भी सभी काम बात पर ही निर्भर करते हैं। 'बातहि हाथी पाइये बातहि हाथी पाँव' बात ही से पराये अपने और अपने पराये हो जाते हैं। मक्खीचूस उदार तथा उदार स्वल्पव्ययी, कापुरुष युद्धोत्साही एवं युद्धप्रिय शान्तिशील, कुमार्गी सुपथगामी अथच सुपन्थी कुराही इत्यादि बन जाते हैं।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

(iii) लाखों कोस का समाचार कौन बतला सकता है?

(iv) पाँच वाक्यों में बात का महत्त्व लिखिए।

(v) 'बातहि हाथी पाइये बातहि हाथी पाँव' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ङ) बात का तत्त्व समझना हर एक का काम नहीं है और दूसरों की समझ पर आधिपत्य जमाने योग्य बात गढ़ सकना भी ऐसे-वैसों का साध्य नहीं है। बड़े-बड़े विज्ञवरों तथा महा-महा कवीश्वरों के जीवन बात ही के समझने-

समझाने में व्यतीत हो जाते हैं। सहृदयगण की बात के आनन्द के आगे सारा संसार तुच्छ जँचता है। बालकों की तोतली बातें, सुन्दरियों की मीठी-मीठी प्यारी-प्यारी बातें, सत्कवियों की रसीली बातें, सुवक्ताओं की प्रभावशालिनी बातें जिनके जी को और का और न कर दें, उसे पशु नहीं पाषाणखण्ड कहना चाहिए, क्योंकि कुत्ता, बिल्ली आदि को विशेष समझ नहीं होती तो भी पुचकार के 'तू-तू', 'पूसी-पूसी' इत्यादि बातें कह दो तो भावार्थ समझ के यथासामर्थ्य स्नेह प्रदर्शन करने लगते हैं। फिर वह मनुष्य कैसा जिसके चित्त पर दूसरे हृदयवान् की बात का असर न हो।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) बालकों की बातें कैसी होती हैं?
(iv) इस अवतरण में पाषाणखण्ड से क्या आशय है?
(v) विद्वानों और कवियों का जीवन कैसे बीतता है?

(च) 'मर्द की जबान' (बात का उदय स्थान) और गाड़ी का पहिया चलता-फिरता ही रहता है। आज जो बात है कल ही स्वार्थान्धता के वश हुजूरों की मरजी के मुवाफिक दूसरी बातें हो जाने में तनिक भी विलम्ब की सम्भावना नहीं है। यद्यपि कभी-कभी अवसर पड़ने पर बात के अंश का कुछ रंग-ढंग परिवर्तित कर लेना नीति-विरुद्ध नहीं है। पर कब? जात्युपकार, देशोद्धार, प्रेम-प्रचार आदि के समय न कि पापी पेट के लिए।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) लेखक ने किसे नियमों का उल्लंघन नहीं माना है?
(iv) 'मर्द की जबान' के चलते-फिरते रहने से क्या तात्पर्य है?
(v) बात के ढंग का कुछ रंग-ढंग परिवर्तित कर लेना किस प्रकार नीति विरुद्ध नहीं है?

2. प्रतापनारायण मिश्र का जीवन-परिचय बताते हुए उनकी साहित्यिक सेवाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

प्रतापनारायण मिश्र का जीवन एवं साहित्यिक परिचय स्पष्ट कीजिए।

3. प्रतापनारायण मिश्र के साहित्यिक परिचय एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. प्रतापनारायण मिश्र का जीवन-परिचय बताते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।

5. प्रतापनारायण मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रतापनारायण मिश्र की भाषा एवं शैली की दो-दो विशेषताएँ लिखिए।

2. 'बात के कारण ही मनुष्य सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।' इस तथ्य को लेखक ने किस प्रकार सिद्ध किया है?

3. 'बातहि हाथी पाइये बातहि हाथी पाँव' से लेखक का क्या तात्पर्य है?

4. प्रतापनारायण मिश्र ने किन पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया?

5. 'अपाणिपादो जवनो ग्रहीता' सूक्ति का अर्थ बताइये।

6. आर्यगण अपनी बात का ध्यान रखते थे, इस बात का क्या प्रमाण है?

7. 'बात' पाठ से मुहावरों की सूची बनाइये।

8. 'बात' पाठ में 'बात' और 'ईश्वर' में क्या साम्य बताया गया है?

9. प्रथम अनुच्छेद में 'बात' शब्द का प्रयोग किन-किन अर्थों में किया गया है?
10. किस प्रकार के व्यक्ति को हमें पाषाणखण्ड समझना चाहिए और क्यों?
11. 'बात' शब्द की गूढ़ता पर 30 शब्द लिखिए।
12. 'बात' पाठ से 10 सुन्दर वाक्य लिखिए।
13. 'बात' पाठ का मुख्य उद्देश्य बताइये।

● अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखक ने भारत के कुपुत्रों द्वारा 'मर्द की जबान' का क्या अर्थ बताया है?
2. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये–
   (अ) प्रतापनारायण मिश्र भारतेन्दु-युग के लेखक हैं। ( )
   (ब) निराकार शब्द का अर्थ शालिग्राम शिला है। ( )
   (स) प्रतापनारायण मिश्र ने 'ब्राह्मण' पत्रिका का सम्पादन नहीं किया। ( )
   (द) 'बात' के कई रूप हैं। ( )
3. प्रतापनारायण मिश्र किस युग के लेखक हैं?
4. प्रतापनारायण मिश्र किस महान् साहित्यकार को अपना गुरु मानते थे?
5. प्रतापनारायण मिश्र द्वारा लिखित दो नाटकों के नाम लिखिए।
6. कलामुल्लाह का क्या अर्थ है?

● व्याकरण-बोध

1. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्य-प्रयोग कीजिए–**
   बात जाती रहना, बात जमना, बात बिगड़ना, बात का बतंगड़ बनाना, बात उखड़ना, बात की बात।
2. **निम्नलिखित में सनियम सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम बताइये–**
   निराकार, निरवयव, परमेश्वर, धर्मावलम्बी, विदग्धालाप, युद्धोत्साही, स्वार्थान्धता, कवीश्वर, योगाभ्यास।
3. **निम्नलिखित में समास-विग्रह करके समास का नाम भी लिखिए–**
   कापुरुष, पाषाणखण्ड, सुपथ, यथासामर्थ्य, अपाणिपादो, कुमार्गी।

● आन्तरिक मूल्यांकन

1. प्रतापनारायण मिश्र के समकालीन लेखकों की एक सूची बनाइये तथा उनकी एक-एक रचनाओं का भी उल्लेख कीजिए।
2. प्रतापनारायण मिश्र का जीवन-परिचय तालिका के माध्यम से कीजिए।

●●●